Summary

Title of research project (Hindi): ''मध्यप्रदेश की आदिवासी जनजातियाँ : एक विश्लेषण'' (पूर्व निमाड़ जिले के विशेष संदर्भ में) 23-205/12(WRO), Date: 05 Feb. 2013

सारांशः

साहित्य में विचारधाराओं, विमर्शों का दौर चलता रहता है। उत्तर आधुनिक विचारधारा के दौरान आदिवासी विमर्श चर्चा के केन्द्र में रहा। ओर आधुनिकता से ऊपजी ऊष को मिटाने के लिए विशेषकार पाश्चात्य देशों के व्यक्ति आदिवासियों के पास जंगलों में कहीं मानसिक शांति एवं सुखकी खेज में जाने लगे, वहाँ उन्हें भौतिकवादी, उपभोक्तवादी जीवन की गतिशीलता एवं अस्थिरता से राहत मिलने लगी। भारतवर्ष में भी हम देखते हैं कि नौकरी, रोजगार या व्यवसाय के माध्यम से अपनी आर्थिक उनति के लिये, करियर के लिए अपनी जडों, अथात अपने गाव या शहर छोड चुके लोग अन्ततः लगातर मशीनीकृ होते रहने के बाद पुनः विश्राम पाने के लिए कुछ समय के लिए ही क्यों न हो अपने गांव या जडों की ओर लौटने लगते है।

इससे स्पष्ट होता है कि भले ही हम उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच जाये, हमें वी आदिम समान्य सहज जीवन शैली कहीं-न-कहीं वापिस बुलाती है। प्रकृति एवं जन-जीवन एवं समाज से विमुख होती जा रही आधुनिक जीवन प्रणाली में कहीं खोने जाने का भय हमें फिर से जीवन के उल्लास, ठहराव एंव प्रकृति से, मानवता से जोड देता है।

इस परियोजना कार्य हेतु जब आदिवासियों से सीधा संपर्क करना पडा तब उनकी प्राकृतिक जीवन शैली हमें बरबस उनसे जोड देती है। अभाव, दरिद्रता एंव आर्थिक रूप से पिछडे होने पर भी उनमें जीवन की उमंग जीवटता एवं खुशी विद्यमान है।

इस परियोजना के माध्यम से आदिवासी जन-जीवन को निकट से देखने के उपरांत लगता है कि हम उनके सुधार के लिए कार्य अवश्य करे, परंतु उनमें रची-बसी सादगी, प्रकृति से उनका अटूट

संबंध, जल जमीन और जंगल से उनके जुड़ाव को जरा भी आहत ना होने दे, उन्हें उनकी संस्कृति की विरासत के साथ बिना छेडे सुख एवं उल्लास के साथ रहने दे।

आदिवासियों के जन-जीवन में आज अपेक्षित सुधार अवश्य हो रहा है, उनके बच्चे स्कूलों में जा रहे हैं। उनके लिए जो योजनाएँ लागू की जा रही है उनका वे लाभ उठा रहे है। शिक्षा के कारण आदिवासियोंा की जो जातियाँ चोरी, लुट या हत्या जैसे जघन्य अपराध करती थी, अब वे भी सामान्य जीवन की ओर लौट रहे हैं। एक सकारात्मक बदलाव उनमें देखने को मिल रहा है।

इस परियोजना का उद्देश्य या सार्थकता यह है कि जो आदिवासी शिक्षित एवं सु-संस्कृत होकर सभ्य समाज की पंक्ति में आकर बैठना चाहते हैं, उसके लिए प्रयासरत है, उन्हें अवश्य ही इसके लिए सभ्य समाज द्वारा सहायता मिलनी चाहिए, किंतु उनकी सांस्कृति विशिष्टता को हमें हरहाल में बचाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

Principal investigator

Dr. Meena Sahebrao Kharat

***